International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

स्वामी दयानन्द सरस्वतीः एक विश्लेषण

अशोक कुमार
Lect. in History M.A., NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सार :–

उन्नीसवीं सदीं में हिन्दू धर्म व समाज में अनेक कुरीतियां आ गई थी। ऐसे समय में समाज के पुनरूत्थान तथा राष्ट्रीयता के विकास में स्वामी दयानन्द सरस्वती का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। दयानन्द सरस्वती भारत में पुनरूत्थान आंदोलन के लूथर[3] माने जाते हैं जिसने लूथर के प्रसिद्ध शब्द ''बाईबल की ओर लौटे ।'' का अनुसरण करते हुए ''वेदों की तरफ लौटो[4]'' का नारा दिया। हिन्दू समाज को शुद्ध करने तथा अन्धविश्वास की दासता से इसे मुक्त करने हेतू युद्ध छेड़ा । स्वामी दयानन्द द्वारा संचालित आर्य समाज से पूर्व चला ब्रहम् समाज आंदोलन[1] पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित एक रक्षात्मक आंदोलन था लेकिन हिन्दू धर्म की आत्मा इससे संतुष्ट नहीं हो सकी । स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे उग्र व साहसी सुधारक जब आर्य समाज संगठन के माध्यम से समाज के सामने आए तो ब्रहम् समाज के प्रति शंकालू लोग आर्य समाज के अनन्य भक्त बन गये , जिनके प्रेरणा के स्त्रोत प्राचीन भारतीय विचार थे।

मूल शब्द :–

पुनुरूत्थान , राष्ट्रीयता , पुनरूत्थान आंदोलन , ब्रह्म समाज, आर्य समाज , अंधविश्वास , पश्चिमी सभ्यता ।

भूमिका :–

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टनकारा(मोखी रियासत) नामक कस्बे में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में सन् 1824[5] ई0 में हुआ । इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। इनके पिता मूर्ति पूजा में विश्वास करने वाले शैव भक्त थे । जबकि इनकी माता रूढ़िवादी विचारों की वैष्णव भक्त थी। बाल्यकाल में ही पिता से उन्हें वैदिक कर्मकाण्ड और न्याय दर्शन की शिक्षा मिली थी। मूर्ति पूजा से विरक्त होकर और प्रभु संबंधित अनेक प्रश्नों के मन में लेकर 1845 ई0 में गृहत्याग कर दिया तथा अगले 15 वर्षों तक ज्ञान की तालाश में भारत भ्रमण करते रहे । 1860 ई0 में वे मथुरा पहुंचे और वहां उन्होंने विरजानन्द[6] को अपना गुरू बनाया जिनके सान्निध्य से उन्होंने वेदों के शुद्ध अर्थ तथा वैदिक धर्म में अगाध श्रद्धा प्राप्त की । सन् 1863 ई0 में ही वे आडम्बरों से युक्त धर्म की मुक्ति के लिए ''पाखण्ड खण्डिनी पताका[7]'' फहराते हुए किन्तु उनका संघर्ष 1875 ई0 में फलित हुआ जब उन्होंने मुम्बई में ''आर्य समाज '' की स्थापना की । लाहौर में 1877 में इसके सिद्धान्त व नियम निश्चित किए गए थे जो अब तक अक्षुण्ण हैं।

शोध–प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र , ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध सामग्री के प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितियक आकड़ों पर आधारित हैं।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शोध के उद्देश्य :–

इस शोध – पत्र को निम्न उददेश्यों को संदर्भ में लिखा गया हैः–

स्वामी दयानन्द की जीवनी के बारे में जानना ।

सामाजिक व धार्मिक जीवन में स्वामी दयानन्द द्वारा किए गए तार्किक बदलावों को समझना।

उन्नीसवीं शताब्दी में समाज पर स्वामी दयानन्द स्वामी तथा आर्य समाज के प्रभाव का मूल्यांकन करना ।

1875 ई0 में स्थापित ''आर्य समाज'' की स्थापना[8] द्वारा स्वामी दयानन्द का उद्देश्य , वैदिक संस्कृति तथा आर्य सभ्यता की सर्वोच्चता स्थापित कर लोगों को नए राष्ट्रीय विचार तथा उच्च जातीय भावनाओं से ओत–प्रोत करना था। वेदों को उन्होंने सर्वोंसर्वा माना[2] तथा अतीत , वर्तमान व भविष्य के ज्ञान का स्त्रोत बताया। वे वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे तथा उपनिषदकाल तक के साहित्य को स्वीकार करते थे। पुराणों को उन्होंने मनगढन्त माना तथा वेद उपनिषद से परे सभी कर्मकाण्डों , परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों को त्याज्य कहा । उनके अनुसार ईश्वर अत , चित और आनन्द हैं।उन्होंने हमेशा कर्मशील जीवन जीने का संदेश दिया । उनके अनुसार मनुष्य भाग्य का खिलौना नहीं बल्कि भाग्य निर्माता हैं। इन विश्वासों से प्रेरित आर्य समाज ने ईसाई व ईस्लाम धर्म प्रचार का , जो हिन्दू धर्म का उपहास करते थे , कड़ा विरोध किया । आर्य समाज की सफलता का श्रेय उसकी धार्मिक कट्टरता ही थी , यह वस्तुतः हिन्दूओं की एक संस्था थी जिसके द्वारा एक उच्च आदर्शों की स्थापना करनी थी।

स्वामी दयानन्द पश्चिमी सभ्यता के विरोधी थे , उन्होंने न तो किसी अन्य धार्मिक अनुभव को नए उत्साह के साथ प्रस्तुत किया और न ही अन्य धर्म के प्रति कोई कोमल भाव ही दिखाए । भारतीय जन–जीवन में व्याप्त अंधविश्वास , कुरीति , ईसाई धर्म द्वारा हिन्दू धर्म पर प्रहार , आलोचनात्मक प्रकृति के कारण धर्म की निःरूसता तथा ईश्वरीय सत्ता में अविश्वास , भारतीय समाज की इसी निराशावादी तस्वीर में स्वामी जी को इसमें शक्ति संचरण के लिए प्रेरित किया ।

धार्मिक क्षेत्र में स्वामी दयानन्द ने मूर्ति पूजा कर्मकाण्ड , बहुदेववाद , बलि प्रथा , यंत्र–तंत्र ,स्वर्ग–नरक की कलपना तथा भाग्य में विश्वास का विरोध किया । उन्होंने शिक्षित व अशिक्षित ब्राहम्णों की अज्ञानता , अंधविश्वास , संकीर्णता तथा प्रथा पर आधारित कार्यों का भी विरोध किया ।

स्वामी दयानन्द प्राचीन सभ्यता के पुनर्स्थापक ही नहीं बल्कि महान व साहसी समाज सुधारक भी थे । उन्होंने अपने देशवासियों के चरित्र के अनेक दोषों के लिए उसकी कटु आलोचना भी की । स्वामी जी ने अपनी पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश[9]'' में खुद स्वीकार किया कि भारत की पराधीनता के लिए , यहां का जर्जर समाज ही कारण रहा हैं ' । उनका उद्देश्य भारत को सामाजिक , धार्मिक व राष्ट्रीय रूप से एक कर देना था । आर्य समाज सामाजिक क्षेत्र में क्रांतिकारी भावनाओं से प्रेरित था। उन्होंने बाल विवाह , बहु विवाह पर्दा पर्था , जातिवाद , अस्पृश्यता तथा पुरोहितवाद पर कुढाराघाट किया। स्वामी जी ने आर्य समाज के माध्यम से जिस सामाजिक जागरूकता को जन्म दिया वह हिन्दू समाज के इतिहास में अद्वितीय था। भारत के सामाजिक इतिहास में वे पहले सुधारक थे , जिन्होंने स्त्री तथा शुद्र को वेद पढ़ने , ऊँची

शिक्षा पाने तथा अन्य दृष्टियों से ऊँची जाति के बराबर अधिकार के लिए संघर्ष किया । वे लड़का व लड़की को समान मानते थे । बाल विधवाओं की बुरी हालत देखकर उसने इस क्षेत्र में सुधार की सम्भावनाओं को जन्म दिया।

दयानन्द स्वामी जी जातिवाद तथा इस व्यवस्था की सभी बुराईयों के कट्टर विरोधी थे। वैदिक काल में तो जाति निर्धारण कर्म व गुणों पर आधारित था किन्तु आधुनिक युग में इसने विकराल रूप धारण कर लिया हैं तथा जन्म पर आधारित हैं जो समाज को विभिन्न हिस्सों में बांटे हुए हैं। स्वामी दयानन्द में सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि ''जन्म से ऐसे ब्राह्मण जो अच्छे कार्य करते हैं , ब्राह्मण हैं तथा ऐसे शुद्ध जो अच्छे कार्य तथा आचरण करते हैं वे भी उच्च वर्ण के ही हैं'' इसका अर्थ यह था कि योग्यता के आधार पर ही मनुष्य का वर्ण निर्धारित होना चाहिए। वे जाति के एक सामाजिक संगठन समझते थे तथा धर्म से इसे अलग कर एक धर्म निरपेक्ष संस्था का रूप दिया । उन्होंने चार वर्णों को मान्यता दी – ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र जिसमें से कोई अश्पृश्य नहीं ।

स्वामी दयानन्द अश्पृथ्यता को अमानवीय तथा वैदिक धर्म के नाम पर कलंक बतलाया। अश्पृथ्यता का सम्बन्ध न तो जन्म से है न ही धर्म से । सही में अछूत वह हैं तो गन्दा हैं तथा खराब वातावरण में रहता हैं। इस प्रकार हिन्दू धर्म का द्वारा इन अछूतों के लिए खोलकर इसे विस्तृत सामाजिक आधार प्रदान किया । अस्पृथ्यता के रोग को समाप्त करने में वे महात्मा गांधी के पूर्वगामी थे। स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज में भाई–चारे तथा समानता की उस भावना को जन्म दिया जिसका वर्तमान रूप भारतीय संविधान में भी झलकता हैं। स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने ''स्वराज[13] '' शब्द का प्रयोग किया , वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग सिखाया। सर्वप्रथम उन्होंनें ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया। कांग्रेस में उग्रपंथी तिलक , लाला लाजपत राय , बिपिन चन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष आदि स्वामी दयानन्द से प्रभावित थे।

आर्य समाज ने शिक्षा तथा ज्ञान के प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी मृत्यु के पश्चात् वैदिक शिक्षा पद्धति पर ''गुरूकुलों '' ''कन्या गुरूकुलों'' तथा पाश्चात्य् पद्धति पर '' डी0ए0वी0 स्कूल–कॉलेज '' देश के कोने कोने में खोले गए[12]। आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन भी चलाया तथा बहुत से हिन्दू जिन्होने दूसरा धर्म स्वीकार कर लिया था , हिन्दू धर्म में वापिस लाए।

निष्कर्षतः

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धर्म , समाज , शिक्षा , सामाजिक चेतना के क्षेत्र में बहुत कुछ दिया। छोटे तथा निम्न वर्ग तक सीधे पहुँच बनाकर उनके विचार आज भी जीवित आन्दोलन हैं। स्वामी जी ने एक प्रगतिशील भारत का सपना देखा तथा सामाजिक शांति का श्री गणेश किया । भारत को आज भी ऐसे क्रांतिकारी सुधारकों की आवश्यकता हैं।

संदर्भ सूचिः–

1. Modern Missions and Culture: Their Mutual relations, Page-236

2. Arya Samaj Brings Indepdence : Illustrated History of the Arya Samaj , Panlad Ram Surrum , Page-20
3. Spiritual Despots: Modern Hinduism and the genealogies of Self rule , Chapter-5 , Page -152
4. Vedic Philosophy of Values , S.G. Nigal , Page-33
5. स्वामी दयानन्द सरस्वती , मीनू सिन्हल ,Page-3
6. Life of Dayanand Saraswati : World Teacher , Har Bilas Sarda (Diwan Bahadur) , Page -37
7. स्वामी दयानन्द सरस्वती , धनपती पाण्डे –1985 , Page -40
8. आर्य समाज और भारतीय सभ्यता , आर0 के0 परूथी ,Page-5
9. The Essence of Satyarth Prakash : J.K. Mehta ,Page -7
10. World Perspectives on Swami Dayananda Saraswati , Page-487
11. Indian Political thought , Urmila Sharma , S.K. Sharma , Page – 147
12. Going to School in South Asia , Amita Gupta , Page – 104
13. Arya Samaj and Indian Civilization , R.K.Pruthi , Page -43